# प्रयोगवाद 1943 - 1954

प्रयोगवाद का आविर्भाव सन् 1943 ईस्वी में तारसप्तक प्रकाशन के साथ हुआ। इसके प्रमुख कवि अज्ञेय जी हैं। इसमें सात कवियों की रचना संग्रहीत हैं। प्रयोगवाद के उल्लेखनीय कवि हुए। अज्ञेय, भवानीप्रसाद मिश्र, भारतभूषण अग्रवाल, धर्मवीर भारती, नेमीचन्द्र जैन तथा मुक्तिबोध।

प्रयोगवाद व्यक्ति के गरिमा को बढ़ाते हुए ऐसे मोड़ पर ला खड़ा किया जो एक साधारण व्यक्ति कभी सोच भी नहीं सकता था, कि हम अपने समाज में बराबरी है अर्थात् मानव की प्रतिष्ठा को बढ़ा दिया। व्यक्ति स्वतंत्र खाने पीने का हकदार बन गया। प्रयोगवादी कवि समाज में फैली कुरीतियों को दूर कर डाला और अपनी भाषा पर विशेष बल दिया।

इस साहित्यिक समय में प्रयोगवादी भावना से ओत-प्रोत होकर राजनीति क्षेत्र में आजादी का समय था। भारत में आंदोलन अपना चरमउत्कर्ष पर पहुँच चुकी थी। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि इसके (प्रयोगवाद) निम्नलिखित प्रवृत्तियाँ हैं :-

i. विचारधारा से मुक्ति
ii. व्यक्तिवाद
iii. यथार्थवाद
iv. लघुमानव की महत्ता
v. वासना की नग्न पद्धति
v. विद्रोही धार्मिकता
vi. बौद्धिक पक्ष
vii. निष्कर्ष

डॉ. ललन कुमार
हिन्दी विभाग
डॉ. एल.के.भी.डी. कॉलेज ताजपुर
समस्तीपुर

ललन कुमार